सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब टेस्ट पेपर-02

पाठ-15 अब कहाँ दूसरे के दुःख से -निदा फ़ाज़ली

निर्देश -

1. **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**
2. **प्रश्न 1 से 3 एक अंक के है।**
3. **प्रश्न 4 से 8 दो अंक के है।**
4. **प्रश्न 9 से 10 पांच अंक के है।**

---

1. लेखक का घर किस शहर में था?
2. चींटियाँ क्यों भयभीत थीं?
3. लेखक की माँ ने किस बात का प्रायश्चित किया?
4. लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?
5. लेखक की माँ ने पूरे दिन रोज़ा क्यों रखा?
6. लेखक की पत्नी को खिड़की मे जाली क्यों लगवानी पड़ी?
7. समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?
8. मट्टी से मट्टी मिले,खो के सभी निशान,
   किसमें कितना कौन है,कैसे हो पहचान
   इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
9. समुद्र को गुस्सा क्यों आया और फिर समुद्र ने अपना क्रोध किस प्रकार प्रकट किया?
10. ‘अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले’ पाठ से हमें क्या सन्देश मिलता है?

सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब टेस्ट पेपर-02

पाठ-15 अब कहाँ दूसरे के दुःख से -निदा फ़ाज़ली (आदर्श उत्तर)

1. लेखक का घर ग्वालियर में था।
2. चींटियाँ सुलेमान की फौज के घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनकर भयभीत थीं।
3. लेखक की माँ की हाथों से गलती से कबतूर का अंडा फूट गया इसलिए उन्होंने प्रायश्चित किया|
4. लेखक की माँ दिन छिपने या सूरज ढलने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं क्योंकि उस समय वे सोते हैं, रात में फूल तोड़ने पर वे श्राप देते हैं।
5. लेखक के घर एक कबूतर का घोंसला था जिसमें दो अंडे थे। एक अंडा बिल्ली ने झपट कर तोड़ दिया, दूसरा अंडा बचाने के लिए माँ उतारने लगीं तो टूट गया। इस पर उन्हें दुख हुआ। माँ ने प्रायश्चित के लिए पूरे दिन रोज़ा रखा और नमाज़ पढ़कर माफी माँगती रहीं।
6. लेखक के घर में कबतूर ने घोंसला बना लिया था जिसमें दो बच्चे थे उनको दाना खिलाने के लिए कबूतर आया जाया करते थे, सामान तोड़ाकरते थे। इससे परेशान होकर लेखक की पत्नी ने मचान के आगे घोंसला सरका दिया और वहाँ जाली लगवानी पड़ी।
7. कई सालों से बिल्डर समुद्र को पीछे धकेल रहे थे और उसकी ज़मीन हथिया रहे थे। समुद्र सिमटता जा रहा था। उसने पहले टाँगें समेटी फिर उकडू बैठा फिर खड़ा हो गया। फिर भी जगह कम पड़ने लगी जिससे वह गुस्सा हो गया। उसने गुस्सा निकालने के लिए तीन जहाज फेंक दिए। एक वर्ली के समुद्र के किनारे, दूसरा बांद्रा मे कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट वे ऑफ इंडिया पर टूट-फूट गया।
8. इन पंक्तियों में बताया गया है कि सभी प्राणी एक ही मिट्टी से बने हैं और अंत में हमारा शरीर व्यक्तिगत पहचान खोकर उसी मिट्टी में मिल जाता है। यह पता नही रहता कि उस मिट्टी में कौन-कौन से मिट्टी मिली हुई है यानी मनुष्य में कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता यह किसी को पता नहीं होता।
9. कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी ज़मीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने अपनी पैफली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकडूँ बैठ गया। फिर खड़ा हो गया...जब खड़े रहने की जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है, और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना |बावजूद कोशिश, वे फिर से चलने-फिरने के काबिल नहीं हो सके।
10. इस पाठ से हमें प्रकृति से प्रेम करने का सन्देश मिलता है। हमें अपने आप को सर्वश्रेष्ठ और अन्य प्राणियों को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का नुकसान नहीं करना चाहिए। सबसे मिलजुलकर रहना तथा सबके सुख-दुःख का ख्याल रखना चाहिए।लेखक के अनुसार इस सृष्टि में जितने भी प्राणी विचरते हैं,भले ही वे पशु-पक्षी हों ,मानव हों ,नदी अथवा पहाड़ ,सभी का इस पृथ्वी पर समान अधिकार है |इन सब में मानव सर्वाधिक स्वार्थी है और अपने लाभार्थ दूसरे सभी सजीव और निर्जीवों को हानि पहुँचाता है|लेखक को लगता है कि मनुष्य अब अपने-आप को छोड़कर न तो किसी से प्रेम करता है और न ही उसे किसी से लगाव है |